विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2552, आश्विन पूर्णिमा, 14 अक्तूबर, 2008 वर्ष 38 अंक 4

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

यस्स पुरे च पच्छा च, मज्झे च नत्थि किञ्चनं।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥

धम्मपद ४२१, ब्राह्मणवग्गो

जिसके आगे, पीछे और बीच में कुछ नहीं है अर्थात जो अतीत, अनागत और वर्तमान की सभी कामनाओं से मुक्त है, जो अकिंचन और अपरिग्रही है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

(बुद्धजीवन-चित्रावली के लगभग १५० चित्र 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' की आर्ट-गैलरी में सुशोभित होंगे। इन पर अनवरत काम चल रहा है परंतु अभी तक सभी चित्र बन नहीं पाये हैं। धम्मगिरि की आर्ट-गैलरी में लगे २७ आलेखों (घटनाओं) और ३१ चित्रों की एक पुस्तक **'बुद्धजीवन-चित्रावली'** *नाम से प्रकाशित कर दी गयी है। इसमें बायें पृष्ठ पर चित्र हैं और सामने दाहिने पृष्ठ पर आलेख हैं। इससे भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित उन घटनाओं को समझना आसान हो जाता है और उनके बारे में फैली गलतफहमी भी दूर होती है। चूंकि इस पुस्तक का नाम "बुद्धजीवन-चित्रावली" रखा गया है इसलिए इसके शेष लेख फिलहाल इसी नाम से प्रकाशित होंगे। जिन्होंने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है, उन्हें इन आलेखों से प्रेरणा मिलेगी और वे आधुनिक तकनीक से छपी इस अत्यंत सुंदर और प्रेरणास्पद पुस्तक 'बुद्धजीवन-चित्रावली' को देखने-पढ़ने की ओर उन्मुख होंगे। इसे केवल देख-पढ़ कर ही संतुष्ट न हो जायँ बल्कि विपश्यना का अभ्यास करके सद्धर्म से सही माने में लाभान्वित हों! सं.)*

अछूत कन्या

ऊंच-नीच की जातपांत का विकट भेदभाव और अस्पृश्यता का कलंक न जाने कब से भारत की सामाजिक व्यवस्था को दूषित करता आ रहा है। २,६०० वर्ष पूर्व के बुद्धकालीन भारत में भी यह विष प्रखर रूप से फैला हुआ था। तथाकथित उच्चवर्णीय ब्राह्मण और क्षत्रियों में भी पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता की प्रबल होड़ लगी हुई थी। एक ओर ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न होने का दावा करने वाले ब्राह्मण अपने आपको श्रेष्ठ तथा अन्यों को हीन माने जाने का दावा करते थे। जैसे कि –

ब्राह्मणाव ब्रह्मुनो पुत्ता।.. ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो, हीना अञ्ञे वण्णा। *–(दी०नि० ३.११४, अग्गञ्ञसुत्त)*

वहीं, दूसरी ओर क्षत्रिय चार वर्णों में अपने आप को सदा प्राथमिकता देते थे। जैसे कि –

खत्तिया ब्राह्मणा वेस्सा, सुद्दा चण्डालपुक्कुसा।

–(विमानवत्थु- ९९५)

उनकी मान्यता थी –

खत्तियो द्विपदं सेट्ठो – मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ होते हैं।

–(संयुत्तनिकाय, सगाथावग्गो- १४, खत्तियसुत्त)

और फिर ब्राह्मण-ब्राह्मण में भी ऊंच-नीच का भेदभाव चलता था। जैसे – कात्यायन और वाशिष्ट ब्राह्मण उच्च, तथा कोसिय और भारद्वाज ब्राह्मण हीन माने जाते थे।

–(विनयपिटक पाचित्तियकण्डं-१८)

इसी प्रकार क्षत्रिय-क्षत्रिय में भी ऊंच-नीच का भेदभाव चलता था। जैसे – शाक्यवंशीय क्षत्रिय अपने आप को ऊंची जाति का मानते थे, और कोशलनरेश प्रसेनजित को नीची जाति का।

–(धम्मपद-अट्ठकथा- ४.३, विटटूभवत्थु)

इसी प्रकार चातुर्वर्णी ब्राह्मणी परंपरा में शूद्रों को ब्रह्मा के पांव से उत्पन्न होना घोषित कर सबसे नीचवर्णीय माना जाता था। परंतु चांडाल और पुक्कुस को शूद्रों से भी नीच माना जाता था। उन्हें सदैव अछूत, अस्पृश्य, उत्पीड़ित, शोषित, अंत्यज और अवर्ण बनाये रखा जाता था। उन्हें छूना तो दूर, उनकी छाया पड़ने मात्र से भी एक सवर्ण व्यक्ति का अपवित्र हो जाना माना जाता था। उनका छूआ पानी तक नहीं पिया जाता था। वे उच्चवर्णीय लोगों के कुंए-बावड़ी से पानी नहीं ले सकते थे। उनके कुंए-बावड़ी अलग होते थे, जिनका पानी उच्चवर्ण के लोग कदापि नहीं पीते थे।

उन दिनों की एक घटना –

प्रकृति नाम की एक षोडशी अछूत-कन्या, अपने परिवार के लिए अछूतों के कुंए में से जल भर रही है। दरिद्रता के मारे मैले-कुचैले, फटे-पुराने वस्त्र पहने है। सामने से भगवान बुद्ध के उपस्थाक (सेवक) आनंद चले आ रहे हैं। भगवान के चचेरे भाई आनंद अत्यंत सुंदर हैं, गौरवर्ण हैं, प्रबल प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। स्पष्टरूप से उच्चवर्णीय क्षत्रिय दिखते हैं। चल कर आ रहे हैं। गर्मी के मारे शरीर झुलस रहा है। प्यास के मारे कंठ सूख रहा है। कुंए के समीप आते हैं और प्रकृति को पानी भरते देख कर, उससे पीने के लिए पानी मांगते हैं। अछूत-कन्या प्रकृति सहम जाती है। यह व्यक्ति भिक्षु होते हुए भी स्पष्टतया उच्च वर्ण का ही है। लेकिन यह नहीं जानता कि मैं नीची जाति की हूं। क्यों न मैं ही इसे जतला दूं कि मैं अछूत परिवार की युवती हूं। यह कुंआ भी अछूतों का है। यह पानी मैं किसी ऊंचे कुल के व्यक्ति को पीने के लिए नहीं दे सकती।

तब वह बहुत भोलेपन से कहती है –

– "श्रमण! मैं नीची जाति की युवती हूं। मैं आपको पीने के

लिए इस कुंए का जल कैसे दे सकती हूं?"

भिक्षु आनंद ने तपाक से उत्तर दिया –

– "बहन! मैंने तुमसे पानी मांगा। जाति नहीं पूछी।"

धन्य हैं भगवान बुद्ध और उनकी जातपांत-तोड़क शिक्षा और धन्य हैं उनकी शिक्षा का पालन करने वाले सर्ववर्णीय शिष्य।

भिक्षु आनंद के आग्रह पर सहमी, सकुचाई हुई अछूत कन्या प्रकृति ने उन्हें जल दिया। प्रसन्नतापूर्वक जल पीकर भिक्षु ने अपनी प्यास बुझायी और चल दिया।

ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन

और

महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस

बुद्धिस्ट सर्किट स्पेशल ट्रेन

भारतीय रेलवे ने अक्टूबर १८ से मार्च २१, २००९ तक धर्मयात्रा के लिए **"महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस"** नामक पूर्णतया वातानुकूलित एक विशेष साप्ताहिक गाड़ी आरंभ की है। इसका विवरण इस वेबसाईट– www.railtourismindia.com पर देखा जा सकता है। रेलवे ने यही शेडूल विपश्यना के गंभीर साधकों के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध एक विशेष फार्म पर **"ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन"** के लिए २१% की विशेष छूट के साथ देने का निर्णय किया है।

ध्यान दें कि २१% की यह राशि अथवा साधक की इच्छानुसार इसका कुछ अंश, इस यात्रा पर जाने वाले विपश्यी साधकों की ओर से **ग्लोबल विपस्सना पगोडा** को दान में दिया जाना चाहिए।

इस दान से विपश्यी यात्रियों को दो प्रकार से पुण्य अर्जित करने का अवसर प्राप्त होगा– एक तो वे यात्रा पर जायँगे और दूसरे 'ग्लोबल विपस्सना पगोडा' के निर्माण में दान दे सकेंगे।

इस छूट के अतिरिक्त रेल का पर्यटन विभाग बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे गंभीर साधकों के लिए सामूहिक साधना का एक सत्र आयोजित करने का प्रयास कर रहा है। यह सत्र महाबोधि मंदिर के बंद हो जाने पर होगा ताकि उस समय अन्य पर्यटकों के आने-जाने का कोलाहल न रहे।

इसी प्रकार का एक सामूहिक साधना सत्र कुशीनगर के मंदिर में भी आयोजित किया जायगा।

सामूहिक साधना का सत्र तभी संभव हो पायगा जबकि एक ट्रेन पर कम से कम ८ - १० विपश्यी साधक हों और उस दिन मंदिर परिसर में कोई अन्य कार्यक्रम न हो।

जो इस यात्रा पर जाना चाहते हैं और जो इसके लिए अपना नाम लिखाना (बुकिंग) चाहते हैं वे कृपया इस वेबसाइट– www.railtourismindia.com को देखें। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए भारतीय रेलवे द्वारा नियुक्त मि. अरुण श्रीवास्तव से इस नंबर पर संपर्क करें– मो. नं. ०९७१७६४०४५२, ०११-२३७०११००, २३७०११०१. ईमेल – arunsrivastava@irctc.com

अधिक जानकारी और सहयोग के लिए साधक 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' के **श्री मनीष शिंदे** से निम्न नं. पर संपर्क कर सकते हैं – मो. ०९३२३५२६४६२, ईमेल – manish@globalpagoda.org ;

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थान पर आयोजित इस कार्यशाला का लाभ ले सकते हैं।

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाः (१) तिथिः १-११ से ९-११-२००८ (११ बजे तक).

संपर्कः श्री उपेंद्र पटेल, १८, श्रद्धा कांप्लेक्स, दूसरी मंजिल, म्युनिसिपल कार्यालय के सामने, मेहसाना-३८४००१, फोनः **(०२७६२)** २५४६३४, २५३३१५. मोबा. ०९३७६३-५३३१५, Email: upendrakpatel@rediffmail.com

(२) **तिथि :** दि. १-१२ से ९-१२-२००८. (केवल अंग्रेजी भाषियों के लिए) **स्थानः** कोठारी फार्म हाऊस, जयपुर-अजमेर राजमार्ग से २ किमी. अंदर, भानक्रोटा-जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर.

संपर्कः श्री अनिल मेहता, ईमल-- anilmehta02@yahoo.com

मंगल मृत्यु

मुंबई के श्री पूरन रतिलाल मेहता का पार्थिव शरीर विगत २१ अप्रेल को शांत हुआ। उन्होंने विपश्यना के अनेक शिविर किये थे और ट्रस्टी आदि के रूप में अनेक प्रकार से सेवाएं दी थीं। हैदराबाद, इगतपुरी तथा अन्य केंद्रों में बहुत दान भी दिया था। इनका पूरा परिवार धर्म के अभ्यास और सेवा से जुड़ा रहा है। इन पुण्यकर्मों के फलस्वरूप उनकी सद्गति में कोई संदेह नहीं।

श्रीलंका के श्री ब्रिंडले रतवत्ते का शरीर गत ९ सितंबर को शांत हुआ। वे प्रारंभिक दिनों में ही विपश्यना से जुड़े, जबकि विपश्यना के कोई केंद्र बने नहीं थे। बोधगया के बरमी विहार में लगे शिविर में पहली बार वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती दमयंती और बेटी दर्शनी के साथ आये और विपश्यना से इतने प्रभावित हुए कि अपने देश लौट कर इन्होंने श्रीलंका में शिविर लगवाने का निर्णय किया। ये शिविर श्रीलंका-वासियों के लिए बड़े प्रेरणास्पद सिद्ध हुए। बुद्धानुयायी भिक्षुओं से उनके बहुत अच्छे स्नेह-संबंध थे, इसलिए जो भी अकेंद्रीय शिविर लगे उनमें गृहस्थों के साथ आदरणीय भिक्षुओं ने भी भाग लिया। कैंडी में एक बहुत सुंदर पर्वत पर "धम्मकूट" विपश्यना केंद्र की स्थापना हुई। इस प्रकार श्रीलंका में विपश्यना की धर्मगंगा बह चली। कुछ समय पश्चात वे स्वयं भी "भदंत सिद्धार्थ" नाम से चीवरधारी भिक्षु बने। श्रीलंका में विपश्यना की पुनर्स्थापना करवा कर वे बहुतों के हित-सुख का कारण बने हैं। इसलिए उनकी सद्गति निश्चित है।

म्यंमा की जेल में विपश्यना केंद्र

म्यंमा की राजधानी यांगों (रंगून) की इनसिन केंद्रीय कारागार में विपश्यना के तीन शिविर लगने पर सरकार ने देखा कि बंदियों के व्यवहार में बड़ा परिवर्तन हुआ है। इससे उत्साहित होकर जेल के एक बड़े वार्ड को सरकार ने विपश्यना का स्थाई केंद्र बनाने का निर्णय किया। पूज्य गुरुदेव ने स्वीकृति देते हुए इसे **'धम्महितसुखगेह'** नाम से संबोधित किया है। निश्चित ही इससे न केवल बंदियों का मंगल होगा, बल्कि अधिकारी वर्ग भी शिविरों में सम्मिलित होकर अपना हितसुख साध सकेंगे। अधिक जानकारी के लिए **संपर्क –** डाइरेक्टर जनरल ऊ झा विन, फोन- ००-९५१-६४२१०४, मो. ००-९५९५०-२२९१४.

धम्मगङ्गा, कोलकाता विपश्यना केंद्र का विस्तार

वर्ष १९८९ में धम्मगङ्गा विपश्यना केंद्र की स्थापना हुई। तब २०० वर्ष पुराने एक तिमंजिले भवन में ही केंद्र का सारा काम होता था। धीरे-धीरे विस्तार हुआ और अब १७५ साधकों के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं का समावेश हो चुका है। मांग बढ़ती जा रही है इसलिए इस वर्ष पुरुषों के लिए १५ नये कमरे तथा नया रसोईघर व भोजन-कक्ष भी बनाने होंगे।

धम्मबल, जबलपुर के विपश्यना केंद्र का विस्तार

धम्मबल केंद्र में १५ कमरे, हॉल, रसोईघर, भोजनकक्ष तथा कार्यालय आदि का निर्माण हो चुका है। महिला-निवास के लिए इस वर्ष शौचालययुक्त १२ कमरों की योजना बनी है। सभी केंद्रों को ८०-जी की आयकर सुविधा प्राप्त होती है। साधक, 'भावी शिविर कार्यक्रम' में प्रकाशित पते पर संपर्क करके इन पुण्यकार्यों में भागीदार बन सकते हैं।

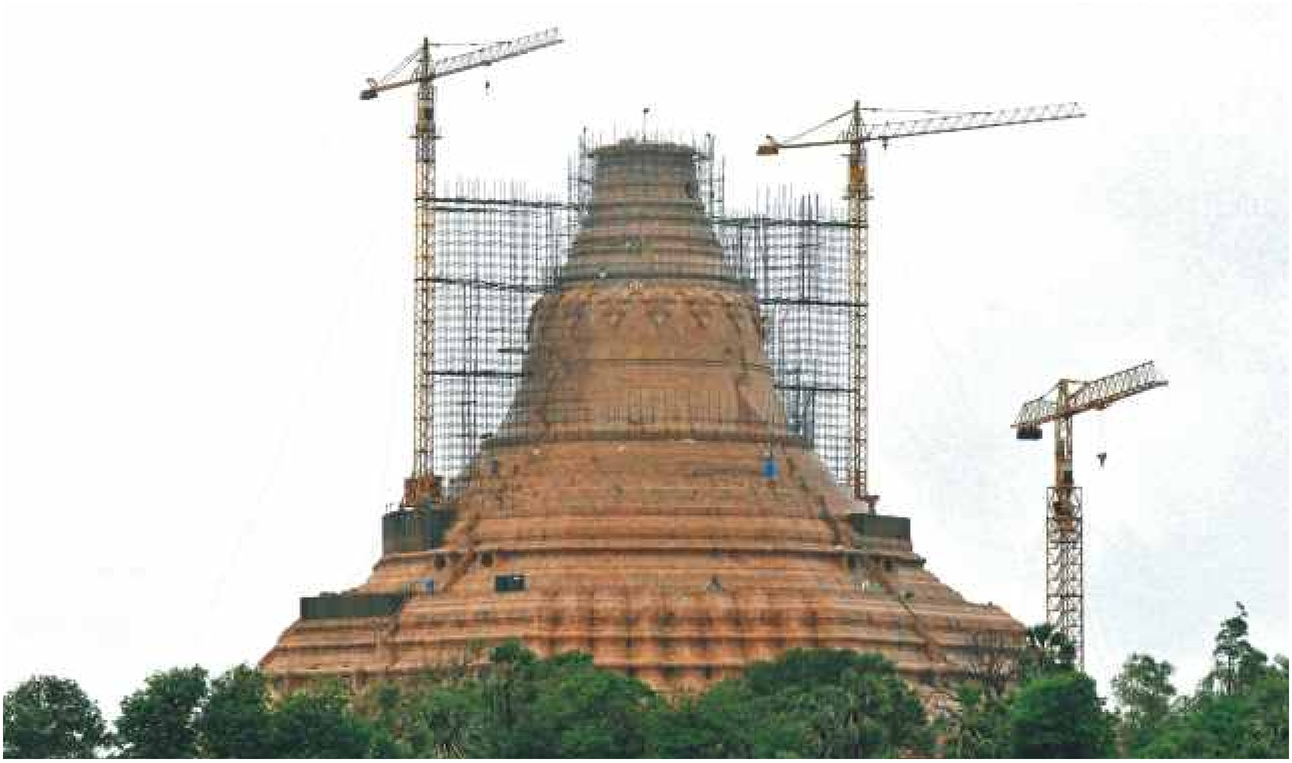

१२ अगस्त, २००८ को लिया गया चित्र

प्रिय साधक-साधिकाओ!

“ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन” अत्यंत मोद के साथ सभी विपश्यी साधकों को सस्नेह आमंत्रित करता है कि वे आगामी २१ दिसंबर, २००८ को **ग्लोबल विपश्यना पगोडा** के मुख्य डोम में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में होने वाले एक दिवसीय शिविर का लाभ उठाएं।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा का डोम इस प्रकार बनाया गया है कि उसमें ८००० साधक एक साथ साधना कर सकें। फाउंडेशन के सभी सेवक चाहते हैं कि वर्ष में कुछेक शिविर ऐसे लगें जिनमें इसकी पूरी क्षमता का उपयोग हो और साधकों को भगवान बुद्ध के पावन अस्थि-अवशेषों के सान्निध्य में ध्यान कर सकने का सुअवसर मिले।

भगवान ने भी कहा है – **समग्गानं तपो सुखो** – एक साथ बैठ कर तपने का सुख असीम है।

दिनः रविवार, दिनांकः २१ दिसंबर, २००८

समयः प्रातः ११ बजे से दोपहर ४ बजे तक

स्थानः ग्लोबल विपश्यना पगोडा का मुख्य डोम,
गोराई, मुंबई.

क्रिस्टल (मणिभ) का एक दृश्य, जो कि पगोडा शिखर के ऊपर लगेगा।
यह अखंड दुर्लभ मणि किसी कृतज्ञ साधक द्वारा दान दी गयी है।

मुंबई के बाहर से आने वाले साधक या साधक-समूह व्यवस्थापकों को अपने आने की अग्रिम सूचना दें ताकि तदनुसार उनके नहाने व नाश्ते का प्रबंध हो सके।

संपर्कः श्री शेखर या श्री डेरिक,
फोनः +९१-२२-२८४५२२६१,
फैक्सः +९१-२२-२८४५२१११.

ईमेलः globalpagoda@hotmail.com

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1-2. Mr. Don & Mrs. Sally McDonald, *Australia. To serve Fiji in addition to Malaysia, Indonesia, Singapore, and Worldwide Course Statistics*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Edward & Mrs. Junko Giorgilli, *Italy. To assist the area teachers to serve Sumatra, Indonesia*

3. Mr. Geoffrey White, *Australia*
To assist the area teachers in serving Northern New South Wales, Australia

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री शाम एवं श्रीमती सरला भाटिया, नाशिक

३. श्री मोहन देवान, त्रिपुरा

4. Ms. Macarena Infante, *Chile*

5. Mr. Francois Kuoch, *France*
To assist the area teacher in serving Cambodia

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री प्रह्लाद चौधरी, धुळे

२. श्री अवधूत गोखले, इंदौर

3. Daw Myat Lay Khaines, *Myanmar*

4. Daw Hla Hla Myint, *Myanmar*

5. Mr. Jason Heng-Moh Lim, *Singapore*

6. Mrs. Kate Howard, *Australia*

7-8. Mr. Stefan & Mrs. Naomi Told, *Spain*

बालशिविर शिक्षक

१-२. श्री अनिल एवं श्रीमती इंदु मटकर, इंदौर

३. श्रीमती सोनल चौधरी, इंदौर

4-5. Mr. Chana & Mrs. Amporn Jirachotiwanit, *Thailand*

6-7. Mr. Surapan Poommaneegorn & Mrs Kanhokwan Pholsomboon, *Thailand*

8. Ms. Kannika Kanjanakot, *Thailand*

9. Ms. Aurranas Kleaw-Akkadej, *Thailand*

10. Ms. Anna Barbena, *Spain*

11. Ms. Spomenka Mujovic, *Serbia*

12. Ms. Vera Pilipovic, *Serbia*

दोहे धर्म के

जाति वर्ण का गोत्र का, चढ़ा शीश अभिमान।
शुद्ध धरम को छोड़कर, भटक गया नादान॥

जहां जाति का, वर्ण का, जहां गोत्र का नाज़।
धरम न टिक पाये वहां, अहंकार का राज॥

जब जब मनुज समाज में, जातिवाद बढ़ जाय।
तब तब मंगल धरम के, सुमन सभी कुम्हलायँ॥

जात-पांत के फेर में, छुटा धरम का सार।
सार छुटा निस्सार ही, बना शीश का भार॥

देख बिचारे धर्म की, कैसी दुर्गति होय।
लड़ें धरम के नाम पर, पाप प्रफुल्लित होय॥

धर्मगंग से ही धुलें, संप्रदाय के लेप।
उखड़े कल्पित मान्यता, चित्त होय निर्लेप॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जात-पांत रो बावळो, सीस चढायो भूत।
धरम छूटग्यो साचलो, रहग्यी छूआछूत॥

संप्रदाय रो संखियो, जात-पांत रो ज्हैर।
सेवन करतो ही रह्यो, कठै खेम, सुख, खैर?

जात-पांत रो, बरण रो, किसो'क गरब गुमान।
मूढ होयग्या, धरम रो, रह्यो न नाम-निसाण॥

संप्रदाय प्यारो लगै, धरम न धारै कोय।
संप्रदाय मँह सुख कठै? धरम धार सुख होय॥

सै कूआं मँह एक सी, पड़ी मोह री भंग।
संप्रदाय री वारुणी, सैं का बिगड़्या ढंग॥

जात-पांत री विसमता, ऊंच-नीच रो भेद।
साम्य धरम जद स्यूं छुट्यो, हुयो नाव मँह छेद॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **आश्विन पूर्णिमा,** 14 **अक्तूबर,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org